तेजस्वि नावधीतमस्तु

रानी पद्मावती तारा योगतन्त्र आदर्श संस्कृत महाविद्याल

इन्द्रपुर, शिवपुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

एवं

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

आमंत्रण पत्र

राष्ट्रिय परिसंवाद

दिनांक- 18 एवं 19 जनवरी 2020

''वैदिक विज्ञान के विविध आयाम''

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के अधीन

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

मानित विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित)

उद्घाटन स्थल

पाणिनी भवन सभागार

कार्यक्रम स्थल

योग साधना केन्द्र

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

शास्त्रकारों ने वेदों की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है- ''सर्वं वेदात् प्रसिद्ध्यति'' अर्थात् वेद ज्ञान के आकर हैं। इसी विषय का विचार करते हुए भगवान मनु नें कहा है-

तपोविशेषैर्विविधैर्व्रतैश्च विधिचोदितः।
वेदः कृत्स्नोऽधिगन्तव्यः सरहस्यो द्विजन्मना॥
वेदमेव सदाभ्यस्येत्तपस्तप्यन्द्विजोत्तमः।
वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते॥

(मनुस्मृति-2/165,166)

इसका तात्पर्य यह है कि वेदों का सम्पूर्ण अध्ययन करना चाहिए, जिससे उसमें निहित रहस्य को जाना जा सके। यह भी कहा गया है कि वेदों का निरन्तर अभ्यास करना चाहिए और यही विद्वानों की तपस्या होनी चाहिए। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान होता है और इस ज्ञान में सृष्टि के सम्पूर्ण तत्त्वों का ज्ञान निहित है। वेदों में आध्यात्मिक ज्ञान के साथ ही लोकजीवन की यात्रा के लिए उपयोगी सभी विषय समाहित हैं। प्राचीन वैदिक सभ्यता में यज्ञ- यागादि के अनुष्ठान से लोकोत्तर अदृष्ट की उपलब्धि के लिए प्रयत्न किया जाता था।

आधुनिक विज्ञान पदार्थों के परीक्षण एवं प्रयोगों पर आधारित है। यह भी सत्य है कि आधुनिक विज्ञान चिकित्सा, प्रौद्योगिकी एवं अन्तरिक्ष विज्ञान में पर्याप्त उन्नति कर रहा है। जबकि विज्ञान के आधुनिक सिद्धान्तों का मूल स्रोत भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ा हुआ है। वैदिक विज्ञान की व्याख्या ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् एवं स्मृति तथा पुराणों में की गयी है।

वर्तमान विज्ञान आज जिस स्थिति में है, वहाँ तक भारत का योगदान क्या है? और भविष्य के लिए क्या हो सकता है? उसका विचार करना आवश्यक है। क्योंकि आज का विज्ञान सवाल करेगा तो वैज्ञानिक कसौटी पर भारतीय शास्त्रों में निहित विज्ञानपरक तत्त्वों को सिद्ध करना पड़ेगा। इसी उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के वेदविज्ञान अनुसन्धान केन्द्र एवं रानी पद्मावती तारा योगतंत्र आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी के संयुक्त आयोजकत्व में द्विदिवसीय राष्ट्रिय परिसंवाद का आयोजन किया जा रहा है।

प्रस्तुत राष्ट्रिय परिसंवाद में विद्वानों द्वारा वैदिक वाङ्मय में निहित लोकोपकारक वैज्ञानिक तथ्यों की प्रस्तुति की अपेक्षा है। निश्चित ही, भारतीय वैदिक विज्ञान आधुनिक परिवेश में भी मानव समाज के लिए परमोपयोगी और मार्गदर्शक की भूमिका में स्थित है। आज के परिवेश में विज्ञान की परिकल्पना के साथ अधोलिखित विषयों की विवेचना भी की जा सकती है-

1. वैदिक सृष्टि विज्ञान
2. वैदिक ज्योतिर्विज्ञान
3. पशुपालन एवं कृषि विज्ञान
4. वेदों में पर्यावरण विज्ञान

5. वैदिक आयुर्विज्ञान
6. वैदिक दर्शनशास्त्र
7. वैदिक यान्त्रिक विज्ञान
8. वैदिक प्रौद्योगिकी विज्ञान
9. वैदिक गायन विज्ञान
10. वेदों में खगोलशास्त्र का उद्भव एवं विकास
11. वास्तु – वैदिक जीवन दृष्टि
12. वैदिक साहित्य
13. वैदिक शाखाओं के साथ अन्य कलाओं का विकास
14. वेदों में धनुर्वेद
15. संक्रामक रोगों की चिकित्सा एवं रोकथाम में योग की भूमिका और इसकी वैदिक पृष्ठभूमि
16. जैविक कृषि में हवन की भूमिका

इसके अतिरिक्त भी अन्य सम्बन्धित विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

पंजीकरण के नियम

प्रतिभागिता के इच्छुक शिक्षकों, विद्वानों एवं अनुसंधाताओं से उल्लिखित विषयों तथा सम्बद्ध विषयो शोध पत्र सारांश दिनांक–.18/01/2020 तक आमंत्रित हैं। सारांश अधिकतम 300 शब्दों में अ संक्षिप्त परिचय के साथ संयोजक, सह-संयोजक अथवा महाविद्यालय के ई-मेल पर भेजे जा सकते हैं–

पूर्ण शोध पत्र परिसंवाद में पढ़कर जमा करना होगा। जिसे महाविद्यालयीय शोध-पत्रिका तार प्रकाशित किया जायेगा।

पत्र का साईज : हिन्दी में – ए.4 पेपर, क्रुतिदेव फॉन्ट, 16 प्वाइंट।
अंग्रेजी में – ए.4 पेपर, टाईम्स न्यू रोमन फॉन्ट, 16प्वाइंट

पंजीकरण शुल्क : शोध छात्रों के लिए Rs. 500 (आवास रहित)।
अध्यापकों के लिए Rs. 700 (आवास रहित)।
विदेशी प्रतिभागियों के लिए Rs. 1500.00 (आवास, भोजन सहित)

संयोजक : **प्रो. महेन्द्र पाण्डेय**, वेदविभागाध्यक्ष / निदेशक, वेदविज्ञान अनुसंधान केन्द्र
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
मो. न.– 9450183355, ई-मेल– mpandeyssv@gmail.com

संयोजक : **डॉ0 लक्ष्मीकान्त पाठक**, एसोसिएट प्रोफेसर–इतिहास
रानी पद्मावती तारा योगतंत्र आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
मो0– 9839906276, ई-मेल- luxmikant.pathak@gmail.com

सह-संयोजक : डॉ0 कमलेश झा, एसोसिएट प्रोफेसर–साहित्य
रानी पद्मावती तारा योगतंत्र आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
मो0– 9415697363, ई-मेल– dr.kamleshjha09@gmail.com
महाविद्यालयीय ई-मेल- ranipadmawati1992@gmail.com

-4-

रानी पद्मावती तारा योगतन्त्र आदर्श संस्कृत महाविद्यालय एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

द्विदिवसीय राष्ट्रिय परिसंवाद

''वैदिक विज्ञान के विविध आयाम''

दिनांक- 18 एवं 19 जनवरी 2020

पंजीकरण प्रपत्र

नाम .....

पद ..... लिंग .....

शिक्षण संस्थान .....

शिक्षक/अनुसंधाता/अन्य .....

शोधपत्र शीर्षक .....

राष्ट्रीयता .....

पत्राचार संकेत .....

..... मोबाइल नं0 .....

आवास अपेक्षित- हाँ / नहीं .....

धनराशि रु. .....

दिनांक ..... 2020 हस्ताक्षर

सूचना- राष्ट्रीय परिसंवाद में सम्मिलित होने के इच्छुक अभ्यर्थी जिन्हें आवास एवं भोजन की सुविधाएँ चाहिए, वे अधोलिखित ई-मेल या दूरभाष द्वारा सूचित करें।

प्रो0 महेन्द्र पाण्डेय, मो0- 9450183355, ई-मेलः mpandeyssv@gmail.com
डॉ0 लक्ष्मीकान्त पाठक, मो0- 9839906276, ई-मेलः luxmikant.pathak@gmail.com
डॉ0 कमलेश झा, मो0- 9415697363, ई-मेलः dr.kamleshjha09@gmail.com
डॉ0 वेदानन्द झा- प्राचार्य, मो0- 9415990582, ई-मेलः ranipadmawati1992@gmail.com